Ñfr % fo'knfo?ufouk'kd
1008 Jhegkohjiwtufoèkku

Ñfrdkj % i-iw- lkfgR; jRukdj] {kekewfrZ
vkpk;Z Jh 108 fo'kn lkxj th egkjkt

laLdj.k % iape&2013 * izfr;k¡ %1000

ladyu % eqfu Jh 108 fo'kky lkxj th egkjkt

lg;ksxh % {kqYyd Jh 105 folkse lkxj th egkjkt

laiknu % cz- T;ksfr nhnh ¼9829076085½ vkLFkk nhnh] liuk nhnh

la;kstu % lksuw] fdj.k] vkjrh nhnh] mek nhnh

lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155

izkfIr LFky % 1- tSu ljkoj lfefr] fueZyd pEikyky xksèkk]
2142] fueZy fudqat] jsfM;ks ekdsZV
efugkjksa dk jkLrk] t;iqj
Qksu % 0141&2319907 ¼?kj½ eks- % 9414812008
2- Jh jkts'k dqekj tSu BsdsnkJ
,&107] cq)k fogkj] vyoj] eks- % 9414016566
3- fo'kn lkfgR; dsUnz
Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh
jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879
4- fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu
t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh
fu;j ykyckÙkh pkSd] xka/kh uxj] fnYyh
eks- 09818115971] 09136248971

eY; % 25@& #- ek=k

eqnzd % ikjl izdk'ku] fnYyh Qksu ua- % 09811374961] 09818394651
E-mail : pkjainparas@gmail.com

रचयिता की कलम से

चारित्र चर्चा में नहीं चर्या से होता है।
चारित्र हीन इन्सान जीवन व्यर्थ ही खोता है।।
चारित्र को पाने वाले चतुर्गति से पार हो जाते हैं।
चारित्रवान ही तीर्थंकर प्रकृति का बीज होता है।।

आज के भौतिकवादी युग में इन्सान चारित्र से चलित हो रहा है तथा चाहत में अपने जीवन के चन्द दिनों को व्यर्थ ही खो रहा है। जो एक बार चारित्रवान के पास जाता है तो उसके मन मस्तिष्क में प्रश्न उत्पन्न होता है आखिर बात क्या है? एक यह भी इन्सान है और एक मैं भी। फिर भी इतना अन्तर क्यों यह अपने जीवन को चारित्र से श्रृंगारित कर रहा है और दूसरी ओर मैं हूँ कि जीवन के दिनों को व्यर्थ ही खो रहा हूँ मुझे भी कुछ करना चाहिए। अतः लोग धर्म के प्रति किसी भी प्रकार से आकर्षित हो इस हेतु आज जगह-जगह पर विभिन्न प्रकार से जैन मन्दिरों में विशेष प्रकार के आकर्षण के केन्द्र स्थापित किए जा रहे हैं।

इन्सान हमेशा नवप्रिय रहा है जहाँ उसे कोई नयापन प्राप्त होता है तो तुरन्त ही आकर्षित हो जाता है उस नयेपन को पाने को इन्सान जग में ऊँची-ऊँची छलांग लगाता है किन्तु अन्त में हार मानकर रह जाता है और कुछ लोगों के द्वारा यह प्रचारित किया जाता है कि धर्म तो वृद्धावस्था की चीज है उनके लिए विघ्न विनाशक 1008 श्री महावीर पूजन विधान ने प्रत्यक्ष कर के बता दिया। धर्म पचपन की लाठी का सहारा नहीं बल्कि बचपन और जवानी में धारण कर मोक्ष की राह पर बढ़ने का नाम है। हम उनकी आराधना कर सकें इसलिए यह **विघ्न विनाशक 1008 श्री महावीर पूजन विधान** भव्य जीवों के कल्याण हेतु एवं पुण्यार्जन हेतु प्रस्तुत है।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है जो विघ्न विनाशक 1008 श्री महावीर पूजन विधान के द्वारा पुण्य संचय कर 'विशद' जीवन को मंगलमय बनाएगें।

–आचार्य विशद सागर

चालो कुण्डलपुर जी

तर्ज–पार्श्वनाथ के जयकारों से....

egkohj ds n'kZu djds] eu g"kkZ;ks js!
pkyks pk¡nuiqj th js!] pkyks ikokiqj th js!
pkyks dq.Myiqj th js———————!
HkDr iz.kke djsa pj.kksa esa] efgek xkosa js!
iwtk HkDrh djus Jkod] nj is tkosa js!
pkyks dq.Myiqj th js———————!
ljoj chp cuk gS efUnj] vfr'k; dkjh js!
prqfnZ'kk esa Qwy f[kys gSa] eaxydkjh js!
pkyks dq.Myiqj th js———————!
ikokiqj ds n'kZu djus] iq.;oku gh tkosa js!
vkrk tc lkSHkkX; mn; esa] n'kZu ikosa js!
pkyks dq.Myiqj th js———————!
foiqykpy ls fnO; èouh dks] HkO; thoogh lqu ikrs!
ohj izHkw dh iwtk djus] ge Hkh vk, js!
pkyks dq.Myiqj th js———————!
xk¡o&xk¡o vkSj uxj&uxj esa] izfrek I;kjh&I;kjh js!
ohrjkx fuxzZUFk euksgj] vfr'k; dkjh js!
pkyks dq.Myiqj th js———————!
pk¡nuiqj esa izdV gq;s rc] peRdkj fn[kyk;s js!
xkS Lru ls Vhys Åij] nqXèk >jk;s js!
pkyks dq.Myiqj th js———————!
HkkX; txs gSa vkt gekjs] n'kZu ik;s js!
^^fo'kn** Hkko ls izHkw pj.kksa esa] 'kh'k >qpk, js!
pkyks dq.Myiqj th js———————!

श्री पंच परमेष्ठी पूजन

स्थापना

अर्हन्तों के वंदन से, उर में निर्मलता आती है।
श्री सिद्ध प्रभू के चरणों में, सारी जगती झुक जाती है।।
आचार्य श्री जग जीवों को, शुभ पंचाचार प्रदान करें।
श्री उपाध्याय करुणा करके, सद्दर्श ज्ञान का दान करें।।
हैं साधू रत्नत्रय धारी, उनके चरणों शत्-शत् वंदन।
हे पंच महाप्रभू! विशद हृदय में, करता हूँ मैं आह्वानन्।।
हे करुणानिधि! करुणा करके, मेरे अन्तर में आ जाओ।
मैं हूँ अधीर तुम धीर प्रभो! मुझको भी धीर बँधा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।।

निर्मल सरिता का प्रासुक जल, मैं शुद्ध भाव से लाया हूँ।
हो जन्म जरादी नाश प्रभू, तव चरण शरण में आया हूँ।।
अर्हंत सिद्ध सूरी पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हो पंच परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीश झुकाता हूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो जन्म-जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलता पाने को पावन, चंदन घिसकर के लाया हूँ।
भव सन्ताप नशाने हेतू, चरण शरण में आया हूँ।।
अर्हंत सिद्ध सूरी पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हो पंच परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीश झुकाता हूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो संसार तापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वच्छ अखण्डित उज्ज्वल तंदुल, श्री चरणों में लाया हूँ।
अनुपम अक्षय पद पाने को, चरण शरण में आया हूँ॥
अर्हंत सिद्ध सूरी पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हो पंच परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीश झुकाता हूँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निज भावों के पुष्प मनोहर, परम सुगंधित लाया हूँ।
काम शत्रु के नाश हेतु प्रभु, चरण शरण में आया हूँ॥
अर्हंत सिद्ध सूरी पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हो पंच परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीश झुकाता हूँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

परम शुद्ध नैवेद्य मनोहर, आज बनाकर लाया हूँ।
क्षुधा रोग का मूल नशाने, चरण शरण में आया हूँ॥
अर्हंत सिद्ध सूरी पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हो पंच परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीश झुकाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतर दीप प्रज्ज्वलित करने, मणिमय दीपक लाया हूँ।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, चरण शरण में आया हूँ॥
अर्हंत सिद्ध सूरी पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हो पंच परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीश झुकाता हूँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्मों की प्राप्ति हेतु मैं, धूप दशांगी लाया हूँ।
अष्ट कर्म का नाश होय मम्, चरण शरण में आया हूँ॥
अर्हंत सिद्ध सूरी पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हो पंच परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीश झुकाता हूँ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस पक्क निर्मल फल उत्तम, तव चरणों में लाया हूँ।
परम मोक्ष फल शिव सुख पाने, चरण शरण में आया हूँ॥
अर्हंत सिद्ध सूरी पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हो पंच परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीश झुकाता हूँ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम् वसुधा पाने को यह, अर्घ्य मनोहर लाया हूँ।
निज अनर्घ पद पाने हेतू, चरण शरण में आया हूँ॥
अर्हंत सिद्ध सूरी पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हो पंच परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– जिन परमेष्ठी पाँच की, महिमा अपरम्पार।
गाते हैं जय मालिका, करके जय-जयकार॥

ताटंक छन्द

जय जिनवर केवलज्ञान धार, सर्वज्ञ प्रभू को करूँ नमन्।
जय दोष अठारह रहित देव, अर्हन्तों के पद में वंदन॥
जय नित्य निरंजन अविकारी, अविचल अविनाशी निराधार।
जय शुद्ध बुद्ध चैतन्यरूप, श्री सिद्ध प्रभू को नमस्कार॥
जय छत्तिस गुण को हृदयधार, जय मोक्षमार्ग में करें गमन।
जय शिक्षा दीक्षा के दाता, आचार्य गुरू को करूँ नमन्॥
जय पच्चिस गुणधारी गुरुवर, जय रत्नत्रय को हृदय धार।
जय द्वादशांग पाठी महान्, श्री उपाध्याय को नमस्कार॥
जय मुनी संघ आरम्भहीन, जय तीर्थंकर के लघुनंदन।
जय ज्ञान ध्यान वैराग्यवान, श्री सर्वसाधु को करूँ नमन्॥

जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो!, श्री जिनवाणी जग में मंगल।
जय गुरु पूर्ण निर्ग्रन्थ रूप, जो हरते हैं सारा कलमल॥

इनका वंदन मैं करूँ नित्य, हो जाए सफल मेरा जीवन।
मैं भाव सुमन लेकर आया, चरणों में करने को अर्चन॥

प्रभु भटक रहा हूँ सदियों से, मिल सकी न मुझको चरण शरण।
अत एवं अनादी से भगवन्, पाए मैंने कई जनम-मरण॥

अब जागा मम् सौभाग्य प्रभू, तुमको मैंने पहिचान लिया।
सच्चे स्वरूप का दर्शन कर, जो समीचीन श्रद्धान किया॥

है अर्ज हमारी चरणों में प्रभु, हमको यह वरदान मिले।
मैं रहूँ चरण का दास बना, जब तक मेरी यह श्वाँस चले॥

तुम पूज्य पुजारी चरणों में, यह द्रव्य संजोकर लाया है।
हो भाव समाधी मरण अहा!, यह विनती करने आया है॥

क्योंकि दर्शन करके हमने, सच्चे पद को पहिचान लिया।
हम पायेंगे उस पदवी को, अपने मन में यह ठान लिया॥

अनुक्रम से सिद्ध दशा पाना, अन्तिम यह लक्ष्य हमारा है।
उस पद को पाने का केवल, जिन भक्ती एक सहारा है॥

जिन भक्ती कर जिन बनने की, मेरे मन में शुभ लगन रहे।
जब तक मुक्ती न मिल पाए, शुभ 'विशद' धर्म की धार बहे।

दोहा

दोहा– अर्हंत् सिद्धाचार्य जिन, उपाध्याय अरु संत।
इनकी पूजा भक्ती से, होय कर्म का अन्त॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यों अनर्घपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– परमेष्ठी का दर्श कर, हृदय जगे श्रद्धान।
पूजा अर्चा से बने, जीवन सुखद महान्॥

इत्याशीर्वाद : (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

महावीराष्टक स्तोत्र

ज्ञानादर्श में युगपद दिखते, जीवाजीव द्रव्य सारे।
व्यय, उत्पाद, ध्रौव्य प्रतिभाषित, अंत रहित होते न्यारे॥
जग को मुक्ति पथ प्रकटाते, रवि सम जिन अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम् नयनों के पथगामी॥1॥

नयन कमल झपते नहिं दोनों, क्रोध लालिमा से भी हीन।
जिनकी मुद्रा शांत विमल है, अंतर बाहर भाव विहीन॥
क्रोध भाव से रहित लोक में, प्रगटित हैं अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम् नयनों के पथगामी॥2॥

नमित सुरों के मुकुट मणी की, आभा हुई है कांती मान।
दोनों चरण कमल की भक्ती, भक्तजनों को नीर समान॥
दुखहर्ता सुखकर्त्ता जग में, जन-जन के अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम् नयनों के पथगामी॥3॥

हर्षित मन होकर मेढक ने, जिन पूजा के भाव किए।
क्षण में मरकर गुण समूह युत, देवगती अवतार लिए॥
क्या अतिशय नर भक्ति आपकी, करके हो अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम् नयनों के पथगामी॥4॥

स्वर्ण समा तन को पाकर भी, तन से आप विहीन रहे।
पुत्र नृपति सिद्धारथ के हैं, फिर भी तन से हीन रहे।
राग द्वेष से रहित आप हैं, श्री युत हैं अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम् नयनों के पथगामी॥5॥

जिनके नयनों की गंगा शुभ, नाना नय कल्लोल विमल।
महत् ज्ञान जल से जन-जन को, प्रच्छालित कर करे अमल॥
बुधजन हंस सुपरिचित होकर, बन जाते अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम् नयनों के पथगामी॥6॥

तीन लोक में कामबली पर, विजय प्राप्त करना मुश्किल।
लघु वय में अनुपम निज बल से, विजय प्राप्त कर हुए विमल॥

सुख शांती शिव पद को पाकर, आप हुए अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम् नयनों के पथगामी।।7।।
महामोह के शमन हेतु शुभ, कुशल वैद्य हो आप महान्।
निरापेक्ष बंधू हैं सुखकर, उत्तम गुण रत्नों की खान।।
भव भयशील साधुओं को हैं, शरण भूत अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम् नयनों के पथगामी।।8।।

दोहा

भागचंद भागेन्दु ने, भक्ति भाव के साथ।
महावीर अष्टक लिखा, झुका चरण में माथ।।
पढ़े सुने जो भाव से, श्रेष्ठ गती को पाय।
भाषा पढ़के काव्य की, 'विशद' वीर बन जाय।।

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज : आनन्द अपार है....)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
जिनबिम्बों की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है।।टेक।।
दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी।।
मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभू जी, द्वार आपके आए हैं।।
शांती पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी।।
हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं।।
नैय्या पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिरनाते हैं।
'विशद' मोक्ष पद पाने हेतू, सादर शीश झुकाते हैं।।
जिनवर का....!

श्री महावीर स्वामी पूजन

स्थापना

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो! हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़े हैं आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ।।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ती भाव से हे भगवन्!, यह भाव सुमन कर में लाए।।
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

क्षण भंगुर यह जग जीवन है, तृष्णा जग में भटकाती है।
स्वाधीन सुखों से दूर करे, निज आत्म ज्ञान विसराती है।।
मैं प्रासुक जल लेकर आया, प्रभु जन्म मरण का नाश करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन केसर की गंध महा, मानस मधुकर महकाती है।
आतम उससे निर्लिप्त रही, शुभ गंध नहीं मिल पाती है।।
शुभ गंध समर्पित करता हूँ, आतम में गंध सुवास भरो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।2।।

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं भ्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं सर्व निर्व. स्वाहा।

हमने जो दौलत पाई है, क्षण-क्षण क्षय होती जाती है।
अक्षय निधि जो तुमने पाई, प्रभु उसकी याद सताती है॥
मैं अक्षय अक्षत लाया हूँ, अब मेरा न उपहास करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो॥3॥

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

हे प्रभो! आपके तन से शुभ, फूलों सम खुशबू आती है।
सारे पुष्पों की खुशबू भी, उसके आगे शर्माती है॥
मैं पुष्प मनोहर लाया हूँ, मम् उर में धर्म सुवास भरो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो॥4॥

ॐ त्रां त्रीं त्रूँ त्रौं त्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्व. स्वाहा।

भर जाता पेट है भोजन से, रसना की आश न भरती है।
जितना देते हैं मधुर मधुर, उतनी ही आश उभरती है॥
नैवेद्य बनाकर लाये हम, न मुझको प्रभु निराश करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो॥5॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मैं सोच रहा सूरज चंदा, दीपक से रोशनी आती है
हे प्रभु! आपकी कीर्ति से, वह भी फीकी पड़ जाती है॥
मैं दीप जलाकर लाया हूँ, मम् अन्तर में विश्वास भरो॥
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो॥6॥

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

जीवों को सदियों से भगवन्, कर्मों की धूप सताती है।
कर्मों के बन्धन पड़ने से, न छाया हमको मिल पाती है॥
यह धूप चढ़ाता हूँ चरणों, मम् हृदय प्रभु जी वास करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो॥7॥

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, न तृप्ति हमें मिल पाती है।
यह फल तो सारे निष्फल हैं, माँ जिनवाणी यह गाती है॥
इस फल के बदले मोक्ष सुफल, दो हमको नहीं उदास करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो॥8॥

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

हम राग द्वेष में अटक रहे, ईर्ष्या भी हमे जलाती है।
जग में सदियों से भटक रहे, पर शांति नहीं मिल पाती है॥
हम अर्घ्य बनाकर लाए हैं, मन का संताप विनाश करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो॥9॥

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूँ उ ह्रौं सा ह्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याण के अर्घ्य

(चौपाई)

अषाढ़ शुक्ल की षष्ठी आई, देव रत्नवृष्टि करवाई।
देव सभी मन में हर्षाए, गर्भ में वीर प्रभु जब आए॥1॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बंधन विमुक्त विघ्न विनाशक अषाढ़ शुक्ल षष्ठ्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत शुक्ल की तेरस आई, सारे जग में खुशियाँ छाईं।
प्रभु का जन्म हुआ अतिपावन, सारे जग में जो मन भावन॥2॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बंधन विमुक्त विघ्न विनाशक चैत शुक्ल त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मार्ग शीर्ष दशमी वदि आया, मन में तव वैराग्य समाया।
सारे जग का झंझट छोड़ा, प्रभु ने जग से मुँह को मोड़ा॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बंधन विमुक्त विघ्न विनाशक मार्गशीर्ष कृष्ण दशम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वैशाख शुक्ल दशमी शुभ आई, पावन मंगल मय अति भाई।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, इन्द्र ने समवशरण बनवाया।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बंधन विमुक्त सर्वविघ्न विनाशक वैशाख शुक्ल दशम्यां केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कार्तिक की शुभ आई अमावस, प्रभु ने कर्म नाश कीन्हें बस।
हम सब भक्त शरण में आये, मुक्ति गमन के भाव बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बंधन विमुक्त सर्वविघ्न विनाशक कार्तिक कृष्ण अमावस्यायां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा

तीन लोक के नाथ को, वन्दन करूँ त्रिकाल।
महावीर भगवान की, गाता हूँ जयमाल।।

(आर्या छन्द)

हे वर्धमान! शासन नायक, तुम वर्तमान के कहलाए।
हे परम पिता! हे परमेश्वर! तव चरणों में हम सिर नाए।।

छंद ताटंक

नृप सिद्धारथ के गृह तुमने, कुण्डलपुर में जन्म लिया।
माता त्रिशला की कुक्षी को, आकर प्रभु ने धन्य किया।।
सत् इन्द्रों ने जन्मोत्सव पर, मंगल उत्सव महत किया।
पाण्डुक शिला पर ले जाकर के, बालक का अभिषेक किया।।
दायें पग में सिंह चिन्ह लख, वर्धमान शुभ नाम दिया।
सुर नर इन्द्रों ने मिलकर तब, प्रभु का जय जयकार किया।।
नन्हा बालक झूल रहा था, पलने में जब भाव विभोर।
चारण ऋद्धी धारी मुनिवर, आये कुण्डलपुर की ओर।।
मुनिवर का लखकर बालक को, समाधान जब हुआ विशेष।
सन्मति नाम दिया मुनिवर ने, जग को दिया शुभम् सन्देश।।
समय बीतने पर बालक ने, श्रेष्ठ वीरता दिखलाई।

वीर नाम की देव ने पावन, ध्वनी लोक में गुंजाई।।
कुछ वर्षों के बाद प्रभु ने, युवा अवस्था को पाया।
कुण्डलपुर नगरी में इक दिन, हाथी मद से बौराया।।
हाथी के मद को तब प्रभु ने, मार-मार चकचूर किया।
अतिवीर प्रभु का लोगों ने, मिलकर के शुभ नाम दिया।।
तीस वर्ष की उम्र प्राप्त कर, राज्य छोड़ वैराग्य लिए।
मुनि बनकर के पंच मुष्टि से, केश लुंच निज हाथ किए।।
परम दिगम्बर मुद्रा धरकर, खड्गासन से ध्यान किया।
कामदेव ने ध्यान भंग कर, देने का संकल्प लिया।।
कई देवियाँ वहाँ बुलाईं, उनने कुत्सित नृत्य किया।
हार मानकर सभी देवियों ने, प्रभु पद में ढोक दिया।।
कामदेव ने महावीर के, नाम से बोला जयकारा।
मैंने सारे जग को जीता, पर इनसे मैं भी हारा।।
बारह वर्ष साधना करके, केवल ज्ञान प्रभु पाए।
देव देवियाँ सब मिल करके, भक्ती करने को आए।
धन कुबेर ने विपुलाचल पर, समवशरण शुभ बनवाया।
छियासठ दिन तक दिव्य देशना, का अवसर न मिल पाया।
श्रावण वदी तिथि एकम को, दिव्य ध्वनी का लाभ मिला।
शासन वीर प्रभु का पाकर, "विशद" धर्म का फूल खिला।
कार्तिक वदी अमावश को प्रभु, पावन पद निर्वाण लिया।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ो सभी जन, सबका मार्ग प्रशस्त किया।

दोहा

महावीर भगवान ने, दिया दिव्य संदेश।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ो तुम, धार दिगम्बर भेष।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व, स्वाहा।।

दोहा

कर्म नाश शिवपुर गये, महावीर शिव धाम।
शिव सुख हमको प्राप्त हो, करते चरण प्रणाम।।

शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथ प्रथम वलय प्रारम्भ

दोहा

नामादिक निक्षेप से, जिनवर चार प्रकार।
पुष्पांजलि कर पूजते, तीनों योग सम्हार॥

(अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो!, हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़े हैं आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ॥
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ती भाव से हे भगवन्!, यह भाव सुमन कर में लाए॥
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्!

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

चार निक्षेप सम्बन्धी अर्घ्य

(गीता छन्द)

जैन आगम में प्रभु, निक्षेप गाये चार हैं।
कर्म घाती नाश कर जिन, हुए भव से पार हैं।
कर्म जित् जो हुए हैं वह, नाम जिन कहलाए हैं।
जिन गुणों को प्राप्त करने, चरण में हम आये हैं॥1॥

ॐ ह्रीं नाम निक्षेप सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रभु की उपल धातू, में प्रतिष्ठा कर रहे।
पूज्य जग में वह हुए हैं, चैत्य जिनवर वह कहे॥
स्थापना निक्षेप से प्रभु, वीर जिन कहलाए हैं।
जिन गुणों को प्राप्त करने, चरण में हम आये हैं॥2॥

ॐ ह्रीं स्थापना निक्षेप सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत में जिनवर हुए जो, चरण में जिनके नमन्।
होयेंगे जो भी अनागत, कर्म का करके शमन॥
द्रव्यतः निक्षेप से वह, प्रभु जिन कहलाए हैं।
जिन गुणों को प्राप्त करने, चरण में हम आये हैं॥3॥

ॐ ह्रीं द्रव्य निक्षेप सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाश करके कर्म का जो, ज्ञान केवल पाए हैं।
वीर्य दर्शन सौख्य गुण, प्रभु अनन्त प्रगटाए हैं॥
दे रहे उपदेश जग को, भाव जिन कहलाए हैं।
जिन गुणों को प्राप्त करने, चरण में हम आये हैं॥4॥

ॐ ह्रीं भाव निक्षेप सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

नाम और स्थापना, द्रव्य भाव ये चार।
जिनवर की पहचान के, रहे चार आधार॥

ॐ ह्रीं नामादि निक्षेप सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ द्वितीय वलयः

दोहा

अष्टकर्म को नाश कर, प्रकट होंय गुण आठ।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पढ़ूँ धर्म का पाठ॥

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो!, हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़े हैं आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ॥
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम पूजा करने को भगवन्, यह भाव सुमन कर में लाए॥
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्!

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टकर्म विनाशक श्री जिन के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

जो ज्ञान गुणों का घात करे, वह ज्ञानावरणी कर्म कहा।
विजय प्राप्त करता जो इन पर, केवलज्ञानी जीव रहा॥
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ॥1॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी जग में, दर्शन गुण का घात करे।
केवल दर्शन पाता वह जो, इस शत्रू को मात करे॥
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ॥2॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुख दुख के वेदन में कारण, कर्म वेदनीय होता है।
धीर वीर महावीर होय जो, इसकी शक्ति खोता है॥

अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ॥3॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ये मोहकर्म दुखदायी है, जग को यह नाच नचाता है।
जो वश में इसको कर लेता, वह तीर्थंकर बन जाता है॥
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ॥4॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है प्रबल कर्म आयू जग में, जो मुक्त नहीं होने देता।
जो विजय प्राप्त करता इस पर, वह मुक्ति बधु को पा लेता॥
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं आयु कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो भाँति-भाँति तन रचता है, वह नामकर्म कहलाता है।
जो इसकी शक्ती क्षीण करे, वह अर्हत् पदवी पाता है॥
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ॥6॥

ॐ ह्रीं नाम कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो ऊँच-नीच पद देता है, वह गोत्र कर्म कहलाता है।
इसको जो पूर्ण विनाश करे, वह ऊँची पदवी पाता है॥
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ॥7॥

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है दुखदाई अन्तराय कर्म, जो दानादिक में विघ्न करे।
वह विशद ज्ञान को पाता है, जो इसकी शक्ती पूर्ण हरे॥
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ॥8॥

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यह आठों कर्म हमेशा से, दुख के कारण कहलाते हैं।
जो विजय प्राप्त करते इन पर, वह निश्चय शिवपुर जाते हैं॥
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ॥9॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणादि अष्ट कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ तृतीय वलयः

सोरठा–सोलह कारण पाय, तीर्थंकर पदवी लहे।
विशद भावना भाय, शिव सुख पा सिद्धी मिले॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो!, हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़े हैं आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ॥
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ती भाव से हे भगवन्!, यह भाव सुमन कर में लाए॥
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्! ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

सोलह कारण भावना के अर्घ्य

दोहा

मिथ्यादर्श विनाशकर, सम्यक्दर्शन पाय।
आत्मध्यान में लीनता, दर्श विशुद्धि कहाय॥1॥

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

देव शास्त्र गुरु की विनय, करते हैं जो लोग।
विशद विनय सम्पन्नता, का पाते संयोग॥2॥

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नता भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

पंच महाव्रत शील जो, पालें दोष विहीन।
निरतिचार व्रत शील में, रहते हैं वह लीन॥3॥

ॐ ह्रीं अनतिचार शीलव्रत भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

भेद ज्ञान करके विशद, रहें ज्ञान में लीन।
अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोग के, रहते सदा अधीन॥4॥

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नता भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

जो संसार शरीर से, त्यागें ममता भाव।
पाते हैं संवेग वह, धर्म निरत स्वभाव॥5॥

ॐ ह्रीं संवेग भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

अपनी शक्ति विचार कर, करें द्रव्य का त्याग।
यह शक्ती तस्त्याग है, करें धर्म अनुराग॥6॥

ॐ ह्रीं शक्तिस्त्यागभावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

द्वादश तप के भेद हैं, तपें शक्ति अनुसार।
शक्ती तस्तप यह कहा, नर जीवन का सार॥7॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्तप भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

धारें समता भाव जो, रहें समाधी लीन।
यही समाधी भावना, राग द्वेष से हीन॥8॥

ॐ ह्रीं साधु समाधि भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

साधक करते साधना, उसमें बाधा होय।
वैय्यावृत्ती यह कही, दूर करें जो कोय।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कर्म घातिया नाश कर, हुए प्रभु अरहंत।
अर्हत् भक्ती कर बने, मुक्तिवधु के कंत।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हत् भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शिक्षा दीक्षा दे रहे, पालें पंचाचार।
आचार्य भक्ती कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।11।।

ॐ ह्रीं आचार्य भक्ती भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ज्ञाता ग्यारह अंग के, चौदह पूरब धार।
उपाध्याय भक्ती शुभम्, करके हो भव पार।।12।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ती भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जिनवर की वाणी विमल, करती मोह विनाश।
प्रवचन भक्ती जो करें, पावें ज्ञान प्रकाश।।13।।

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्ती भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

आवश्यक कर्तव्य को, पालें धार विवेक।
आवश्यक अपरिहारिणी, कही भावना नेक।।14।।

ॐ ह्रीं आवश्यक अपरिहार्य भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जिन शासन जिन धर्म का, जग में करें प्रकाश।
करके धर्म प्रभावना, करें मोह तम नाश।।15।।

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

साधर्मी से नेह धर, कुटिल भाव से हीन।
वात्सल्य शुभ भावना, धारें सदगुण लीन।।16।।

ॐ ह्रीं वात्सल्य भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सोलह कारण भावना, के यह सोलह अर्घ्य।
चढ़ा रहे हम भाव से, पाने सुपद अनर्घ्य।।
तीर्थंकर पद के लिए, सोलह भावना भाय।
बन के तीर्थंकर प्रभु, मोक्ष महा फल पाय।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धियादि षोडशकारण भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अथ चतुर्थ वलयः

सोरठा–भक्ती भाव के साथ, बत्तिस इन्द्र पूजा करें।
झुका रहे हैं माथ, भक्ती में तल्लीन हो।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो!, हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़े हैं आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ।।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ती भाव से हे भगवन्!, यह भाव सुमन कर में लाए।।
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्! ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

बत्तीस इन्द्रों द्वारा पूजित जिन के अर्घ्य

(जोगीराशा छन्द)

असुर कुमार भवन वासी के, पंक भाग से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं असुर कुमार इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नाग कुमार भवन वासी के, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लेकर, जिनवर के गुण गावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं नाग इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

विद्युत इन्द्र भवन वासी के, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युत इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सुपर्णेन्द्र जिन पूजा करने, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अग्नी इन्द्र भवन वासी के, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें।।

वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं अग्नि इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

मारुत इन्द्र भवन वासी के, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं मारूत इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

इन्द्र स्तनित भवन वासी के, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं स्तनित इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सागर इन्द्र भवन वासी के, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं सागर इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दीप इन्द्र भवनालय वासी, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं दीप इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दिक् सुरेन्द्र भवनालय वासी, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।10।।

ॐ ह्रीं दिक्सुरेन्द्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

किन्नर इन्द्र प्रथम व्यन्तर के, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार सहित आकर के, जिनवर के गुण गावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं किन्नर इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

द्वितीय व्यन्तर देव के स्वामी, खर पृथ्वी से आवें।
इन्द्र किम्पुरुष भक्ती करने, निज परिवार को लावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।12।।

ॐ ह्रीं किम्मपुरुष इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

इन्द्र महोरग तृतिय व्यन्तर, खर पृथ्वी से आवें।
सब परिवार सहित आकर के, जिनवर के गुण गावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।13।।

ॐ ह्रीं महोरग इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

व्यन्तर देवों के स्वामी सब, खर पृथ्वी से आवें।
गन्धर्व इन्द्र भक्ती करने को, निज परिवार भी लावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।14।।

ॐ ह्रीं गन्धर्व इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

यक्ष इन्द्र व्यंतर देवों के, खर पृथ्वी से आवें।
सब परिवार सहित आकर के, जिनवर के गुण गावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।15।।

ॐ ह्रीं यक्ष इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

रत्न प्रभा के पंक भाग से, राक्षस इन्द्र भी आवें।
सब परिवार सहित आकर के, जिनवर के गुण गावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।16।।

ॐ ह्रीं राक्षस इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

भूत इन्द्र सप्तम व्यन्तर के, खर पृथ्वी से आवें।
सब परिवार साथ में लेकर, जिनवर के गुण गावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।17।।

ॐ ह्रीं भूत इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पिशाचेन्द्र व्यन्तर देवों के, खर पृथ्वी से आवें।
सब परिवार साथ में लेकर, जिनवर के गुण गावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।18।।

ॐ ह्रीं पिशाच इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ज्योतिष देवों के स्वामी शुभ, चंद्र इन्द्र कहलावें।
आठ सौ योजन ऊपर नभ से, निज परिवार को लावें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।19।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष चन्द्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ज्योतिष देवों के स्वामी रवि, प्रति इन्द्र कहलावें।
आठ सौ अस्सी योजन नभ से, परिवार सहित जो आवें।।
वीर प्रभु की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ।।20।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष रवि इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

(राधेश्याम छंद)

स्वर्गों से सौधर्म इन्द्र भी, ऐरावत पर चढ़ आवें।
निज परिवार सहित भक्ती से, साथ में श्री फल भी लावें।।
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में हम सिर नावें।।21।।

ॐ ह्रीं सौधर्म इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

गजारूढ़ ईशान इन्द्र भी, पुंगी फल लेकर आवें।
निज परिवार सहित भक्ती से, चरणों में बलि-बलि जावें।।
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में हम सिर नावें।।22।।

ॐ ह्रीं ईशान इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सिंहारूढ़ सुकुण्डल मण्डित, सनत कुमार इन्द्र आवें।
आम्र फलों के गुच्छे लेकर, परिवार सहित प्रभु गुण गावें।।
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में हम सिर नावें।।23।।

ॐ ह्रीं सानत कुमार इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अश्वारूढ़ सुकुण्डल मण्डित, माहेन्द्र कुमार इन्द्र आवें।
केले के गुच्छे लेकर यह, परिवार सहित प्रभु गुण गावें।।
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में हम सिर नावें।।24।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ब्रह्म स्वर्ग से इन्द्र हंस पर, चढ़कर आवें सह परिवार।
पुष्प केतकी करें समर्पित, प्रभु की बोले जय-जयकार।।
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में हम सिर नावें।।25।।

ॐ ह्रीं ब्रह्म इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

लान्तव इन्द्र स्वर्ग से चलकर, दिव्य फलों को ले आवें।
निज परिवार सहित भक्ती से, प्रभु पद में बलि-बलि जावें।।
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में हम सिर नावें।।26।।

ॐ ह्रीं लान्तव इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शुक्र इन्द चकवा पर चढ़कर, पुष्प सेवन्ती ले आवें।
निज परिवार सहित भक्ती से, प्रभु पद में बलि-बलि जावें।।
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित हम गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में हम सिर नावें।।27।।

ॐ ह्रीं शुक्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सतारेन्द्र कोयल वाहन पर, नील कमल लेकर आवें।
निज परिवार सहित भक्ती से, प्रभु पद में बलि-बलि जावें।।
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में हम सिर नावें।।28।।

ॐ ह्रीं सतार इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

आनत इन्द्र गरुण पर चढ़कर, पनस फलों को ले आवें।
निज परिवार सहित भक्ती से, प्रभु पद में बलि-बलि जावें।।
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में हम सिर नावें।।29।।

ॐ ह्रीं आनत इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पदम विमानारूढ़ सुसज्जित, तुम्बरू फल लेकर आवें।
प्राणत इन्द्र परिवार सहित शुभ, जिनवर के गुण को गावें।।
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में हम सिर नावें।।30।।

ॐ ह्रीं प्राणत इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कुमुद विमानारूढ़ भक्ति से, आरणेन्द्र गन्ने लावें।
निज परिवार सहित भक्ती से, प्रभु पद में बलि-बलि जावें।।
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में हम सिर नावें।।31।।

ॐ ह्रीं आरणेन्द्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अच्युतेन्द्र चढ़कर मयूर पर, धवल चँवर लेकर आवें।
निज परिवार सहित भक्ती से, प्रभु पद में बलि-बलि जावें।।
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में हम सिर नावें।।32।।

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

भावन व्यन्तर और ज्योतिषी, सोलह स्वर्ग के बारह देव।
बत्तिस इन्द्र प्रभु चरणों की, भक्ती में रत रहें सदैव।।
भक्ती भाव से पूजा करके, चरणों में करते वन्दन।
प्रभु गुण पाने हेतू करते, विशद भाव से हम अर्चन।।33।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत् इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अथ पंचम वलयः

दोहा

दोहा– महावीर भगवान का, समवशरण सुखकार।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, हो जाऊँ भव पार।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो!, हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़े हैं आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ।।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ती भाव से हे भगवन्!, यह भाव सुमन कर में लाए।।
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्!

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

46 मूलगुण के अर्घ्य

10 जन्म के अतिशय (शेर छंद)

अतिशय स्वरूप जन्म से, जिनदेव पाए हैं।
भक्ती से आके देव सभी, सिर झुकाए हैं।।
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभु पद वही, जो आपका रहा।।1।।

ॐ ह्रीं अतिशयरूप सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महके सुगंध अतिशय, जिनवर की देह से।
गाते हैं गीत ज्यों भ्रमर, जिनवर के नेह से।।
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभु पद वहीं, जो आपका रहा।।2।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हंत के शरीर में, नहिं स्वेद हो कभी।
शत् सूर्य की फीकी पड़े, प्रभु देह से छवि।।
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभु पद वहीं, जो आपका रहा।।3।।

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मलमूत्र आदि से रहित, प्रभु का शरीर है।
जो दर्श करे बार-बार, वह हो अधीर है।।
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभु पद वहीं, जो आपका रहा।।4।।

ॐ ह्रीं नीहार रहित सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रिय हित वचन से प्रभु के, शुभ अमृत झरें।
अमृत का पान करके भवि, जीव शिव वरें।।
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभु पद वहीं, जो आपका रहा।।5।।

ॐ ह्रीं प्रिय हित वचन सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का अतुल्य बल, जग में अपार है।
पाता नहीं सुरेन्द्र, चक्रवर्ति पार है।।
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभु पद वहीं, जो आपका रहा।।6।।

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन का रुधिर है श्वेत, स्वच्छ क्षीर सम अहा!
जो प्रेम का प्रतीक, वात्सल्य का रहा।।
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभु पद वहीं, जो आपका रहा।।7।।

ॐ ह्रीं श्वेत रक्त सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु एक सहस आठ शुभ, लक्षण को पाए हैं।
मानो जिनेन्द्र पुष्प की, कलियाँ खिलाए हैं।।
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभु पद वहीं, जो आपका रहा।।8।।

ॐ ह्रीं 1008 शुभ लक्षण सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु समचतुष्क देह प्राप्त, सौम्य रहे हैं।
निर्माण सुभग नाम कर्म, से जो गहे हैं।।
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभु पद वहीं, जो आपका रहा।।9।।

ॐ ह्रीं सम चतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वज्रवृषभ संहनन, युत देह पाए हैं।
अद्भुत चरम शुभ देह का, अतिशय दिखाए हैं।।
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभु पद वहीं, जो आपका रहा।।10।।

ॐ ह्रीं वज्र वृषभ नाराचसंहनन सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान के 10 अतिशय

अडिल्य छंद

समवशरण में तीर्थंकर, तिष्ठें जहाँ।
हो सुभिक्ष शत् योजन में, चहुँ दिश वहाँ।।
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभु सम्मान में।।11।।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टाय सुभिक्षत्व घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गमन करें जब प्रभु, अधर आकाश में।
जय-जय ध्वनि कर चले, इन्द्र नर साथ में।।

दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभु सम्मान में॥12॥

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वोत्तर दिश में मुखकर, रहते प्रभु।
चतुर्दिशा में दर्शन, देते जग विभू॥
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभु सम्मान में॥13॥

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का जँह गमन, न हो हिंसा कभी।
प्रभु महिमा से दया, भाव रखते सभी॥
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभु सम्मान में॥14॥

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर पशुकृत और, अचेतन ये सभी।
इनसे नहिं उपसर्ग, प्रभु पर हो कभी॥
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभु सम्मान में॥15॥

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु अंत ना प्रभु का, कवलाहार है।
कांतिमान प्रभु का तन, अपरंपार है॥
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभु सम्मान में॥16॥

ॐ ह्रीं कवलाहार रहित घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्यायों के ईश्वर, श्री जिनवर कहे।
रहे कोई न शेष, प्रभु को न रहे॥

दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभु सम्मान में॥17॥

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वर घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नख अरु केश न वृद्धी, पाते हैं कभी।
केवल ज्ञान के होते, स्थिर हों सभी॥
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभु सम्मान में॥18॥

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र स्वयं टिमकार रहित, न पलक हिलें।
देख-देख अतिशय, जग जन के मन खिलें॥
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभु सम्मान में॥19॥

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमौदारिक तन में, ना छाया पड़े।
चरम शरीरी प्रभु को, लख प्रभुता बढ़े॥
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभु सम्मान में॥20॥

ॐ ह्रीं छाया रहित अतिशय घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

(चौपाई-अंजलीबद्ध), 15 मात्रा)

अर्ध मागधी भाषा पाय, श्री जिन का अतिशय कहलाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम॥
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार॥21॥

ॐ ह्रीं अर्धमागधी भाषा धारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीव विरोधी मैत्री पाय, श्री जिन का अतिशय कहलाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार।।22।।

ॐ ह्रीं सर्व मैत्री भाव धारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दशों दिशा निर्मल हो जाय, श्री जिनवर अतिशय दिखलाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार।।23।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षय धारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गगन पूर्ण निर्मलता पाय, श्री जिनवर अतिशय दिखलाए।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार।।24।।

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन देवोपनीतिशय धारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षट् ऋतु के फल फूल खिलाय, जहां विराजे श्री जिनराय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार।।25।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भूमि रत्नमयी हो जाय, दर्पण सम शोभा को पाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार।।26।।

ॐ ह्रीं आदर्श तल प्रतिमा रत्नमही देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जहाँ प्रभु का पग पड़ जाय, स्वर्ण कमल सुर वहाँ रचाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार।।27।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मंद सुगंधित पवन सुहाय, रोग शोक का नाश कराय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार।।28।।

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय ध्वनी से गगन गुँजाय, चउ निकाय के सुर मिल आय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार।।29।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मेघ कुमार देवता आय, पावन गंधोदक बरसाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार।।30।।

ॐ ह्रीं मेघकुमार कृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पवन कुमार देवता आय, निष्कंटक भूमी कर जाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार।।31।।

ॐ ह्रीं वायु कुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु का गमन जहाँ हो जाय, प्राणी सब आनंद मनाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार।।32।।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धर्मचक्र आगे ले जाय, सर्वाण्ह यक्ष महिमा दिखलाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार।।33।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य शुभ मंगल लाय, समवशरण में दिए सजाए।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार।।34।।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

4 अनंत चतुष्टय

(चौबोला छन्द)

क्रोध लोभ मद माया जीते, आतम ध्यान लगाया है।
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, केवल ज्ञान जगाया है।।
अनंत चतुष्टय धारी जिनकी, महिमा विस्मयकारी है।
प्रभु के पावन चरण कमल में, अतिशय ढोक हमारी है।।35।।

ॐ ह्रीं अनंत ज्ञान गुण प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मोक्ष महल का ध्येय बनाकर, क्षायिक दर्शन पाया है।
क्षमाभाव को धारण करके, आतम धर्म जगाया है।।

अनंत चतुष्टय धारी जिनकी, महिमा विस्मयकारी है।
प्रभु के पावन चरण कमल में, अतिशय ढोक हमारी है।।36।।

ॐ ह्रीं अनंत दर्शन गुण प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म मोहनीय नाश किए, क्षायिक सम्यक्त्व जगाया है।
भव सागर से पार हुए प्रभु, सुख अनंत उपजाया है।।
अनंत चतुष्टय धारी जिनकी, महिमा विस्मयकारी है।
प्रभु के पावन चरण कमल में, अतिशय ढोक हमारी है।।37।।

ॐ ह्रीं अनंत सुख गुण प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जान के चेतन की शक्ती को, संयम से प्रगटाया है।
अंतराय का नाश किए प्रभु, वीर्य अनंत उपजाया है।।
अनंत चतुष्टय धारी जिनकी, महिमा विस्मयकारी है।
प्रभु के पावन चरण कमल में, अतिशय ढोक हमारी है।।38।।

ॐ ह्रीं अनंत वीर्य गुण प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

तीन पीठिका युक्त सिंहासन, रत्न जड़ित है कान्तीमान।
अधर विराजे उसके ऊपर, स्वर्णिम तन है आभावान।।
समवशरण में प्रभु विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार।।39।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत् प्रातिहार्य प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरने वाला शोक जगत का, तरु अशोक कहलाता है।
पृथ्वी कायिक होता फिर भी, तरु की संज्ञा पाता है।।
समवशरण में प्रभु विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार।।40।।

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत् प्रातिहार्य प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता की झालर से मण्डित, उज्ज्वल छत्र शोभते तीन।
तीन लोक की प्रभुता को जो, दिखलाने में रहे प्रवीन॥
समवशरण में प्रभु विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥41॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत् प्रातिहार्य प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के पीछे बना मनोहर, तेजस्वी शुभ भामण्डल।
कान्तिमान द्रव्यों का मानो, हो जाता है खण्डित बल॥
समवशरण में प्रभु विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥42॥

ॐ ह्रीं भामण्डल सत् प्रातिहार्य प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्ध्व मुखी पुष्पों की वृष्टी, सुरगण करते भाव विभोर।
परम सुगन्धी महक रही है, प्रभु के आगे चारों ओर॥
समवशरण में प्रभु विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥43॥

ॐ ह्रीं पुष्प वृष्टि सत् प्रातिहार्य प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल दिव्य ध्वनी जिनकी शुभ, तीन लोक दर्शाती है।
भव्य जीव के मन मधुकर को, बार-बार हर्षाती है॥
समवशरण में प्रभु विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥44॥

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनी सत् प्रातिहार्य प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यबाद्य बजते हैं मनहर, देव दुन्दुभी कहलाती।
चतुर्दिशाओं को आभा से, सर्व लोक में महकाती॥
समवशरण में प्रभु विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥45॥

ॐ ह्रीं देव दुन्दुभी सत् प्रातिहार्य प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चँवर ढुराते देव मनोहर, प्रभु के आगे दोनों ओर।
रत्न जड़ित हैं महिमा मण्डित, करते मन को भाव विभोर॥
समवशरण में प्रभु विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥46॥

ॐ ह्रीं चौंसठ चँवर सत् प्रातिहार्य प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

समवशरण में पहली भूमी, चैत्य भूमि कहलाती है।
सुर बालाएँ नाटक शाला, में प्रभु के गुण गाती है॥
श्रेष्ठ जिनालय बने वहाँ पर, जहाँ विराजे श्री भगवान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभु का गुणगान॥47॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित चैत्य प्रसाद भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूजी भूमी रही खातिका, मनहर खाई रही महान।
रत्न मई चित्रों से चित्रित, जिसकी रही निराली शान॥
देव नाव में क्रीड़ा करते, बोल रहे प्रभु का जय गान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभु का गुणगान॥48॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित खातिका भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति रमणीय लताएँ फैलीं, लता भूमि में चारों ओर।
ध्यान लीन बैठे कई मुनिवर, करते सबको भाव विभोर॥
पूर्व दिशा में वेदी सुन्दर, जिसका कौन करे गुण गान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभु का गुणगान॥49॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित लता भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन भूमी में सुन्दर वन, बने हुए हैं चारों ओर।
मध्य में चैत्य वृक्ष शोभित है, वनचर घूमें चारों ओर॥

सुर नर मुनि के इन्द्र भाव से, करते पूजा और विधान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभु का गुणगान॥50॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित उपवन भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश प्रकार चिन्हों से चिह्नित, ध्वजा पताका है मनहार।
भक्त वन्दना करते मिलकर, चरण कमल में बारम्बार॥
जैन धर्म की ध्वज फहराती, करती है प्रभु का सम्मान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभु का गुणगान॥51॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित ध्वज भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष भूमी में सुरतरु, शोभित होते मंगलकार।
मन वाञ्छित फल देने वाले, भवि जीवों को हैं सुखकार॥
गरिमा में मण्डित है पावन, समवशरण अति शोभावान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभु का गुणगान॥52॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न जड़ित शोभा से मंडित, बने जिनालय चारों ओर।
श्री जिनबिम्ब की पूजा करते, भवन भूमि में भाव विभोर॥
छत्र ध्वजा तोरण से मण्डित, नव स्तूप हैं शोभा वान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभु का गुणगान॥53॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित रत्न जड़ित भवन भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह सभा में तीन गती के, भव्य जीव जा पाते हैं।
गणधर मुनी आर्यिका देवी, देव पशू भी जाते हैं॥
ॐकार मय दिव्य देशना, का करते हैं सब रसपान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभु का गुणगान॥54॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री मण्डप भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम पीठ पर धर्म चक्र ले, इन्द्र खड़े हैं चारों ओर।
मंगल द्रव्य अष्ट नव निधियाँ, ध्वज फहराकर करें विभोर।
गंधकुटी में कमलाशन पर, अधर में रहते श्री भगवान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभु का गुणगान॥55॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी पीठोपरि धर्म भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में ग्यारह गणधर, वीर प्रभु के साथ रहे।
इन्द्रभूति गौतम स्वामी जी, उन सब में से मुख्य कहे॥
वर्तमान शासन नायक प्रभु, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए॥56॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित इन्द्र भूति आदि एकादश गणधर सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में वीर प्रभु के, तीन सतक पूरबधारी।
ज्ञान ध्यान में लीन मुनीश्वर, मंगलमय हैं अविकारी॥
वर्तमान शासन नायक प्रभु, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए॥57॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित त्रयोशत पूर्वधर मुनि सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में वीर प्रभु के, नौ हजार नौ सौ शिक्षक।
जैन धर्म के रहे प्रभावक, जिनश्रुत के जो हैं रक्षक॥
वर्तमान शासन नायक प्रभु, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए॥58॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित नव सहस नवशत् शिक्षक मुनि सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त सतक केवल ज्ञानी प्रभु, महावीर के साथ रहे।
द्रव्य चराचर के ज्ञाता शुभ, केवल ज्ञान के नाथ कहे॥
वर्तमान शासन नायक प्रभु, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए॥59॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित सप्त सतक केवल ज्ञानी मुनि सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक हजार तीन सौ मुनिवर, अवधिज्ञान के धारी हैं।
समवशरण में महावीर के, अतिशत मंगलकारी हैं।।
वर्तमान शासन नायक प्रभु, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए।।60।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित त्रयोदश शत् अवधि ज्ञानी मुनि सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ विक्रिया धारी मुनिवर, नौ सौ संख्या में जानो
निष्पृह वृत्ती धारण करते, करुणा के धारी मानो।।
वर्तमान शासन नायक प्रभु, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए।।61।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित नवशत् विक्रिया ऋद्धिधारी मुनि सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुल मति मनः पर्ययज्ञानी, पंच शतक हैं अविकारी।
समवशरण में वीर प्रभु के, शोभित थे मंगलकारी।।
वर्तमान शासन नायक प्रभु, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए।।62।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित पंचशत् विपुल मति मनः पर्यय ज्ञानी मुनि सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनी चार सौ वादी जानो, जैन धर्म का करें प्रभाव।
देव, शास्त्र, गुरु की वाणी सुन, हो जाते हैं निर्मल भाव।।
वर्तमान शासन नायक प्रभु, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए।।63।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित चतुः शत् वादी मुनि सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर प्रभु के समवशरण में, चौदह सहस मुनी निर्ग्रन्थ।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहकर, करते थे कर्मों का अन्त।।
वर्तमान शासन नायक प्रभु, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए।।64।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित चतुर्दश सहस्र निर्ग्रन्थ मुनि सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया नाश किए प्रभु, छियालिस गुण प्रगटाते हैं।
समवशरण में शोभित जिन को, सादर शीश झुकाते हैं।।

वर्तमान शासन नायक प्रभु, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए।।65।।

ॐ ह्रीं छियालीस मूलगुण सहित समवशरण स्थिति विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य– ॐ ह्रां क्रों ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्रेभ्यों नमः सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा

तीन लोक में श्रेष्ठ है, महावीर सन्देश।
पाने सब व्याकुल रहें, ब्रह्मा विष्णु महेश।।

(ताटंक छन्द)

प्रभु दर्शन से दर्शन मिलता, वाणी से शुभ सन्देश मिले।
चर्या से चारित मिलता है, सम्यक् तप कर हृदय खिले।।
सभी अमंगल हरने वाले, वीर प्रभु पहले मंगल।
श्रद्धा भक्ती से पूजा कर, हो जाँय नाश सारे कल मल।।
सिद्धारथ के नन्दन बनकर, कुण्डलपुर में जन्म लिए।
माता त्रिशला की कुक्षी को, आकर प्रभु जी धन्य किए।।
जब वर्धमान का जन्म हुआ, सारे जग में मंगल छाया।
सुर नर पशु की क्या बात करें, नरकों में सुख का क्षण आया।।
इन्द्रों ने जय-जयकार किए, नर सुर पशु जग के हर्षाए।
सौधर्म इन्द्र ने खुश होकर, कई रत्न कुबेर से वर्षाए।।
बचपन-बचपन में बीत गया, फिर युवा अवस्था को पाया।
करके कई कौतूहल जग में, लोगों के मन को हर्षाया।।
जब योग्य अवस्था भोगों की, तब योग प्रभु ने धार लिया।
नहिं ब्याह किया गृह त्याग दिया, संयम से नाता जोड़ लिया।।
प्रभु पंच मुष्ठि से केशलुंच, कर वीतराग मुद्रा धारी।
शुभ ध्यान लगाया आतम का, प्रभु हुए स्वयं ही अविकारी।।
तप किए प्रभु द्वादश वर्षों, अरु कर्मों को निर्जीर्ण किए।
फिर शुद्ध चेतना के चिन्तन, से कर्म घातिया क्षीण किए।।
तब केवल ज्ञान प्रकाश हुआ, बन गये प्रभु अन्तर्यामी।

शुभ समवशरण की रचना कर, सुर इन्द्र हुए प्रभु अनुगामी।।
जब प्रभु की वाणी नहीं खिरी, जग के नर नारी अकुलाए।
चौंसठ दिन यूँ ही बीत गये, प्रभु की वाणी न सुन पाए।।
सौधर्म इन्द्र चिन्तित होकर, अपने मन में यह सोच रहा।
है समवशरण में कमी कोई, या मेरा है दुर्भाग्य अहा।।
फिर अवधि ज्ञान से जान लिया, गणधर स्वामी न आए हैं।
इसलिए अभी तक जिनवर का, सन्देश नहीं सुन पाए हैं।।
फिर इन्द्र बटुक का भेष धार, गौतम स्वामी के पास गये।
अरु अहं नष्ट करने हेतू, वह प्रश्न किए कुछ नये-नये।।
वह समाधान कर सके नहीं, फिर समवशरण की ओर गये।
गौतम को सबसे पहले ही, शुभ मानस्तंभ के दर्श भये।।
होते ही मान गलित गौतम, प्रभु के चरणों झुक जाते हैं।
तब रत्नत्रय को धार स्वयं, चउ ज्ञान प्रकट कर पाते हैं।।
विपुलाचल पर्वत के ऊपर, प्रभु की वाणी से बोध मिला।
हर श्रावक का मन प्रमुदित था, हर प्राणी का भी हृदय खिला।।
हे वीर! तुम्हारे शासन में, हम सेवक बनकर आए हैं।
रत्नत्रय की निधियाँ पाने के, हमने शुभ भाव बनाए हैं।।
मन में मेरे कुछ चाह नहीं, बश रत्नत्रय का दान करो।।
प्रभु 'विशद' ज्ञान की किरणों से, हमको सद ज्ञान प्रदान करो।
तुम वीर बली हो महाबली, तुमने सारा जग तारा है।
यह तुमको भक्त पुकार रहा, इसको क्यों नाथ विसारा है।।

(छन्द आर्या)

जय महावीर सन्मति महान्, जय अतीवीर जय वर्द्धमान।
जय जय जिनेन्द्र जय वीर नाथ, जय जय जिन चरणों झुका माथ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व कर्म बन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दोहा

वीर प्रभु की भक्ती कर, साता मिले विशेष।
रोग शोक सब शान्त हों, रहे कोई न शेष।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

गणधरों का समुच्चय अर्घ्य

वृषभादिक महावीर प्रभु के, गणधर जग में हुए महान्।
तीर्थंकर की दिव्य देशना, का करते हैं जो गुणगान।।
वृषभसेन आदिक चौदह सौ, बावन हुए हैं मंगलकार।
उनके चरणों विशद भाव से, वन्दन मेरा बारम्बार।।

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरों के चतुर्दश शत् द्विपञ्चाशतगणधरेभ्योः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

महावीर भगवान की आरती

तर्ज–तुमसे लागी लगन.....

तुम हो तारण तरण, वीर संकट हरण ज्ञानधारी।
हम तो आरती, उतारें तुम्हारी।।
भाव भक्ती करें, कष्ट सारे हरें–धर्म धारी।
पार नैय्या, लगाओ हमारी।।

कुण्डलपुर में प्रभु जन्म पाये, तीनों लोकों में शुभ हर्ष छाये।
इन्द्र आये तभी, दर्श कीन्हे सभी-मंगलकारी।।
हम तो आरती.....।।1।।

भोग जग के नहीं जिनको भाए, योग धारण में मन को लगाए।
आप त्यागी बने, वीतरागी बने–ब्रह्मचारी।।
हम तो आरती.....।।2।।

कर्म घाती सभी तुम नशाए, ज्ञान केवल प्रभु जी जगाए।
आए पावापुरी, पाए मुक्ती श्री, निर्विकारी।।
हम तो आरती.....।।3।।

भक्त आये हैं चरणों तुम्हारे, आशा लेकर के आये हैं द्वारे।
आशा पूरी करो, कर्म सारे हरो, संकटहारी।।
हम तो आरती.....।।4।।

शीश चरणों में सेवक झुकाए, 'विशद' आशीष पाने को आए।
वीर बन जायें हम, कोई होवे न गम, उम्र सारी।।
हम तो आरती.....।।5।।

महावीर विधान की प्रशस्ति

दोहा

शासन नायक जो रहे, वर्तमान के खास।
उनकी भक्ती मैं करूँ जब तक चलती श्वांस॥
भारत देश प्रदेश है, पावन राजस्थान।
जिसमें अतिशत क्षेत्र है, मंगल मयी महान॥
शहर एक अजमेर है, रहा स्वयं सम्भाग।
श्रद्धालू श्रावक कई, करें धर्म अनुराग॥
पावन वर्षा योग यह, दो हजार सन् सात।
भक्त सभी आये यहाँ, जोड़े अपने हाथ॥
करना है पूजन कोई, दीजे आशीर्वाद।
युगों-युगों तक जो करें, सारे जग जन याद॥
सोलह दिन के पक्ष में, सोलह हुए विधान।
श्रावण के शुभ माह में, किया प्रभु गुणगान॥
चाँदनपुर शुभ गाँव में, प्रकट हुए भगवान।
तीर्थकर महावीर जी, रही अलग पहिचान॥
दर्श करें जो भाव से, उनके हों दुख दूर।
सुख शांती वैभव सभी, से होवे भरपूर॥
उनका ही शुभ लक्ष्य ले, निर्मित किया विधान।
करे भाव से अर्चना, उसका हो कल्याण॥
श्रावक शुक्ला पूर्णिमा, हुआ कार्य का अंत।
भूल चूक को भूलकर, पढ़े सभी धी मंत॥
रचना की शुभ भाव से, चाहूँ न सम्मान।
'विशद' भावना भा रहा, पाऊँ केवल ज्ञान॥
यही चाह मन में जगी, पाऊँ कैसे नाथ।
साथ निभाओं हे प्रभो! चरण झुकाऊँ माथ॥

॥इति॥

प. पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते हैं उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल से आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं नि. स्वा.।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि. स्वा.।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥

विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण पुष्पं निर्व. स्वा.।

काल अनादि से हे गुरुवर! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की! क्षुधा मेटने आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वा.।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं नि. स्वा.।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतू, गुरु चरणों में आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वा.।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि. स्वा.।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

जयमाला

दोहा– **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाला।।

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण।।
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी।।
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े।।
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया।।
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते।।
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है।।
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है।।
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ती में रम जाना।।
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता।।
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें।।
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वा.।

दोहा– **गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।**
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प. पू. आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी का चालीसा

दोहा– क्षमा हृदय है आपका, विशद सिन्धु महाराज।
दर्शन कर गुरुदेव के, बिगड़े बनते काज॥
चालीसा लिखते यहाँ, लेकर गुरु का नाम।
चरण कमल में आपके, बारम्बार प्रणाम॥

(चौपाई)

जय श्री 'विशद सिन्धु' गुणधारी, दीनदयाल बाल ब्रह्मचारी।
भेष दिगम्बर अनुपम धारे, जन-जन को तुम लगते प्यारे॥
नाथूराम के राजदुलारे, इंदर माँ की आँखों के तारे।
नगर कुपी में जन्म लिया है, पावन नाम रमेश दिया है॥
कितना सुन्दर रूप तुम्हारा, जिसने भी इक बार निहारा।
बरवश वह फिर से आता है, दर्शन करके सुख पाता है॥
मन्द मधुर मुस्कान तुम्हारी, हरे भक्त की पीड़ा सारी।
वाणी में है जादू इतना, अमृत में आनन्द न उतना॥
मर्म धर्म का तुमने पाया, पूर्व पुण्य का उदय ये आया।
निश्छल नेह भाव शुभ पाया, जन-जन को दे शीतल छाया॥
सत्य अहिंसादि व्रत पाले, सकल चराचर के रखवाले।
जिला छतरपुर शिक्षा पाई, घर-घर दीप जले सुखदाई॥
गिरि सम्मेदशिखर मनहारी, पार्श्वनाथजी अतिशयकारी।
गुरु विमलसागरजी द्वारा, देशव्रतों को तुमने धारा॥
गुरु विरागसागर को पाया, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाया।
है वात्सल्य के गुरु रत्नाकर, क्षमा आदि धर्मों के सागर॥
अन्तर में शुभ उठी तरंगे, सद् संयम की बढ़ी उमंगें।
सन् तिरान्वे श्रेयांसगिरि आये, दीक्षा के फिर भाव बनाए॥
दीक्षा का गुरु आग्रह कीन्हें, श्रीफल चरणों में रख दीन्हें।
अवसर श्रेयांसगिरि में आया, ऐलक का पद तुमने पाया॥
अगहन शुक्ल पञ्चमी जानो, पचास बीससौ सम्वत् मानो।

सन् उन्नीस सौ छियानवे जानो, आठ फरवरी को पहिचानो॥
विरागसागर गुरु अंतरज्ञानी, अन्तर्मन की इच्छा जानी।
दीक्षा देकर किया दिगम्बर, द्रोणगिरी का झूमा अम्बर॥
जयकारों से नगर गुँजाया, जब तुमने मुनि का पद पाया।
कीर्ति आपकी जग में भारी, जन-जन के तुम हो हितकारी॥
परपीड़ा को सह न पाते, जन-जन के गुरु कष्ट मिटाते।
बच्चे बूढ़े अरु नर-नारी, गुण गाती है दुनियाँ सारी॥
भक्त जनों को गले लगाते, हिल-मिलकर रहना सिखलाते।
कई विधान तुमने रच डाले, भक्तजनों के किए हवाले॥
मोक्ष मार्ग की राह दिखाते, पूजन भक्ती भी करवाते।
स्वयं सरस्वती हृदय विराजी, पाकर तुम जैसा वैरागी॥
जो भी पास आपके आता, गुरु भक्ती से वो भर जाता।
'भरत सागर' आशीष जो दीन्हें, पद आचार्य प्रतिष्ठा कीन्हें॥
तेरह फरवरी का दिन आया, बसंत पंचमी शुभ दिन पाया।
जहाँ-जहाँ गुरुवर जाते हैं, धरम के मेले लग जाते हैं॥
प्रवचन में झंकार तुम्हारी, वाणी में हुँकार तुम्हारी।
जैन-अजैन सभी आते हैं, सच्ची राहें पा जाते हैं॥
एक बार जो दर्शन करता, मन उसका फिर कभी न भरता।
दर्शन करके भाग्य बदलते, अंतरमन के मैल हैं धुलते॥
लेखन चिंतन की वो शैली, धो दे मन की चादर मैली।
सदा गूँजते जय-जयकारे, निर्बल के बस तुम्ही सहारे॥
भक्ती से हम शीश झुकाते, 'विशद गुरु' तुमरे गुण गाते।
चरणों की रज माथ लगावें, करें 'आरती' महिमा गावें॥

दोहा– 'विशद सिन्धु' आचार्य का, करें सदा हम ध्यान।
माया मोह विनाशकर, हरें पूर्ण अज्ञान॥
सूर्योदय में नित्य जो, पाठ करें चालीस।
सुख-शांति सौभाग्य का, पावे शुभ आशीष॥

– ब्र. आरती दीदी

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:–माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ती करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय॥

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्त्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह–1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. विशद पञ्चागम संग्रह
97. जिन गुरु भक्ती संग्रह
98. धर्म की दस लहरें
99. स्तुति स्त्रोत संग्रह
100. विराग वंदन
101. बिन खिले मुरझा गए
102. जिंदगी क्या है
103. धर्म प्रवाह
104. भक्ती के फूल
105. विशद श्रमण चर्या
106. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
107. इष्टोपदेश चौपाई
108. द्रव्य संग्रह चौपाई
109. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
110. समाधितन्त्र चौपाई
111. शुभषितरत्नावली
112. संस्कार विज्ञान
113. बाल विज्ञान भाग-3
114. नैतिक शिक्षा भाग-1, 2, 3
115. विशद स्तोत्र संग्रह
116. भगवती आराधना
117. चिंतवन सरोवर भाग-1
118. चिंतवन सरोवर भाग-2
119. जीवन की मन:स्थितियाँ
120. आराध्य अर्चना
121. आराधना के सुमन
122. मूक उपदेश भाग-1
123. मूक उपदेश भाग-2
124. विशद प्रवचन पर्व
125. विशद ज्ञान ज्योति
126. जरा सोचो तो
127. विशद भक्ती पीयूष
128. विशद मुक्तावली
129. संगीत प्रसुन
130. आरती चालीसा संग्रह
131. भक्तामर भावना
132. बड़ा गाँव आरती चालीसा संग्रह
133. सहस्त्रकूट जिनार्चना संग्रह
134. विशद महाअर्चना संग्रह
135. विशद जिनवाणी संग्रह
136. विशद वीतरागी संत
137. काव्य पुञ्ज
138. पञ्च जाप्य
139. श्री चंवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
140. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
141. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह